ऊर्जा उत्पादन होने से पूर्व ही हम उसका उपयोग कर देते हैं।
कोयला, खनिज तेल और प्राकृतिक गैस ऐसे स्त्रोत हैं, जिसका अत्यधिक उपयोग होता है जबकि इन्हें इकट्ठा होने में कई हजार साल लग जाते हैं।

ऊर्जा संसाधन सीमित है।
विश्व ऊर्जा संसाधन का लगभग 1 प्रतिशत ही भारत में पाया जाता है जबकि विश्व की कुल जनसंख्या का 6 प्रतिशत भारत में निवास करती है।

हम जिन ऊर्जा स्त्रोतों का उपयोग करते हैं उनमें से अधिकांश का दोबारा उपयोग एवं पुनरारंभ नहीं हो सकता।
उपयोग होने वाले ईंधन में से 80 प्रतिशत ईंधन गैर पुनरारंभ ऊर्जा स्त्रोतों का संघटन करता है। ऐसा कहा जाता है कि हमारे ऊर्जा संसाधन और 40 वर्ष तक ही पर्याप्त होंगे।

जब हम ऊर्जा की बचत करते हैं तो देश की अधिक धनराशि की भी बचत करते हैं।
भारत में कच्चे तेल की जरूरतों में से लगभग 75 प्रतिशत को आयात द्वारा पूरा किया जा रहा है जिसकी लागत प्रतिवर्ष लगभग 1,50,000 करोड़ रूपए है।

ऊर्जा बचत द्वारा हम अपने पैसों की बचत कर सकते हैं।
जब हम लकड़ी ईंधन की कम खपत करते हैं, तब लकड़ी की आवश्यकता भी कम होती है और इसे इकट्ठा करने के लिए हमें मेहनत भी कम करनी पड़ती है।

ऊर्जा की बचत अर्थात ऊर्जा का सृजन
एक यूनिट ऊर्जा की बचत दो यूनिट ऊर्जा उत्पादन के समान है।

प्रदूषण को कम करने के लिए ऊर्जा की बचत।
ऊर्जा उत्पादन एवं उपयोग से अत्यधिक अनुपात में वायु प्रदूषण और 83 प्रतिशत से भी अधिक ग्रीन हाऊस गैस का उत्सर्जन होता है।

कल के उपयोग के लिए आज ऊर्जा संरक्षण, हमारा कर्तव्य है।
भारत में एक पुरानी कहावत इस प्रकार है– धरती, जल एवं वायु हमारे माता–पिता का उपहार नहीं हैं, बल्कि वह हमारे बच्चों से प्राप्त उधार है।

संरक्षण को अपनी आदत बनाऐं।

महिलाऐं एवं ऊर्जा
महिलाऐं ग्रामीण ऊर्जा की प्रक्रिया का एक आवश्यक अंग हैं, क्योंकि वे घरेलू उपयोग के लिए स्वच्छ एवं पर्याप्त जल, जानवरों के लिए चारा, कृषि कार्यों एवं अन्य महत्वपूर्ण सुविधाओं को जुटाने में लगी रहती हैं। महिलाओं का ऊर्जा से गहरा संबंध है।

मूलभूत ऊर्जा आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए महिलाओं एवं बच्चों को जलावन की लकड़ी जुटाने में काफी मेहनत करनी पड़ती है। उन स्थानों में जहां जलावन की लकड़ी की उपलब्धता कम है, वहां लोगों के खान–पान की आदतों में भी बदलाव आता है, जिसका अंतिम असर पौष्टिकतापर पड़ता है। महिलाऐं घरेलू कार्यों में लगभग 6 घंटों तक का समय व्यतीत करती हैं और इस दौरान उनके बच्चे भी साथ होते हैं। पारम्परिक चूल्हें में जहां वायु संचार की उचित व्यवस्था नहीं होती और पर्याप्त मात्रा में बायोमास का प्रयाग नहीं होता, वहां उनके स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है और इससे सबसे अधिक महिलाऐं एवं कन्या शिशु ही प्रभावित होती हैं।

क्या इससे बचने का कोई उपाय है ....
ऊर्जा प्रभावी धुँआ रहित चूल्हे एवं सौर ऊर्जा व बायो गैस जैसे स्वच्छ ईंधन का उपयोग इसका संभावित समाधान है जिसका अब प्रचलन बढ़ता जा रहा है।

महिलाओं को विशेष सुविधा
भारतीय नवीकरणीय ऊर्जा विकास अभिकरण ने महिलाओं को ऊर्जा के नवीन एवं नवीकरणीय स्त्रोतों का उपयोग एवं प्रसार को बढ़ावा देने में सहायता देने का प्रस्ताव किया है।

ऊर्जा कार्य करने की क्षमता है।

ऊर्जा और इसका वर्तमान उपयोग
ग्रामीण क्षेत्रों में ऊर्जा की मांग दिनों–दिन बढ़ती जा रही है। वर्तमान में ऊर्जा का उपयोग मुख्य रूप से खाना बनाने, प्रकाश की व्यवस्था करने और कृषि कार्य में किया जा रहा है। 75 प्रतिशत ऊर्जा की खपत खाना बनाने और प्रकाश करने हेतु उपयोग में लाई जा रही है। ऊर्जा प्राप्त करने के लिए बिजली के अतिरिक्त स्थानीय स्तर पर उपलब्ध जैव ईंधन एवं केरोसिन आदि का भी उपयोग ग्रामीण परिवारों द्वारा बड़े पैमाने पर किया जाता है। कृषि क्षेत्र में ऊर्जा का उपयोग मुख्यतः पानी निकालने के काम में किया जाता है।

इन कार्यों में बिजली और डीजल भी उपयोग में लाया जा रहा है। देश में कृषि कार्यों में मानव शक्ति बड़े पैमाने पर व्यर्थ चली जाती है। यद्यपि ऊर्जा उपयोग का स्तर गांव के भीतर अलग–अलग है, जैसे अमीर और गरीबों के बीच, सिंचाईपरक भूमि और सूखी भूमि के बीच, महिलाओं और पुरूषों के बीच आदि।

भारत में ऊर्जा के इस्तेमाल की वर्तमान स्थिति

भारत में लगभग 70 प्रतिशत आबादी ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है। यदि हमें वर्तमान विकास की गति को बरकरार रखना है तो ग्रामीण ऊर्जा की उपलब्धता को सुनिश्चित करना सबसे महत्वपूर्ण चुनौती है। अब तक हमारे देश के 21 प्रतिशत गांवों तथा 50 प्रतिशत ग्रामीण परिवारों तक बिजली नहीं पहुंच पाई है।

ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच प्रति व्यक्ति ऊर्जा की खपत में काफी अंतर है। उदाहरण के लिए 75 प्रतिशत ग्रामीण परिवार रसोई के ईंधन के लिए लकड़ी पर, 10 प्रतिशत गोबर की उपालियों पर और लगभग 5 प्रतिशत रसोई गैस पर निर्भर हैं। जबकि इसके विपरीत, शहरी क्षेत्रों में खाना पकाने के लिए 22 प्रतिशत परिवार लकड़ी पर, अन्य 22 प्रतिशत केरोसिन पर तथा लगभग 44 प्रतिशत परिवार रसोई गैस पर निर्भर हैं। घर में प्रकाश के लिए 50 प्रतिशत ग्रामीण परिवार केरोसिन पर तथा अन्य 48 प्रतिशत बिजली पर निर्भर हैं।

जबकि शहरी क्षेत्रों में इसी कार्य के लिए 89 प्रतिशत परिवार बिजली पर तथा अन्य 10 प्रतिशत परिवार केरोसिन पर निर्भर हैं। ग्रामीण महिलाऐं अपने उत्पादक समय में से लगभग चार घंटे का समय रसोई के लिए लकड़ी चुनने और खाना बनाने में व्यतीत करती हैं लेकिन उनके इस श्रम के आर्थिक मूल्य को मान्यता नहीं दी जाती।

देश के विकास के लिए ऊर्जा की उपलब्धता एक आवश्यक पूर्व शर्त है। खाना पकाने, पानी की सफाई, कृषि, शिक्षा, परिवहन, रोजगार सृजन एवं पर्यावरण को बचाये रखने जैसे दैनिक गतिविधियों में ऊर्जा महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

ग्रामीण क्षेत्रों में उपयोग होने वाले लगभग 80 प्रतिशत ऊर्जा बायोमास से उत्पनन्न होतीहै। इससे गांव में पहले से बिगड़ रही वनस्वति की स्थिति पर और दबाव बढ़ता जा रहा है। गैर उन्नत चूल्हा, लकड़ी इकट्ठा करने वाली महिलाऐं एवं बच्चों की कठिनाई को और अधिक बढ़ा देती है। सबसे अधिक, खाना पकाते समय इन घरेलू चूल्हों से निकलने वाला धुंआं महिलाओं और बच्चों के श्वसन तंत्र को काफी हद तक प्रभावित करता है।

कट्स सेन्टर फॉर कन्ज्यूमर एक्शन, रिसर्च एण्ड ट्रेनिंग
D-217, भास्कर मार्ग, बनीपार्क, जयपुर 302016
फोनः +91.141.2282821/5133259; +91.141.2282485/4015395
ई–मेलः cart@cuts.org; वेबसाईटः www.cuts-international.org/CART

Save to Survive

Campaign on energy efficient products

हमें ऊर्जा संरक्षण क्यों करना चाहिए?

धरती, मानव जाति की जरूरतों को पूरा करने के लिए पर्याप्त ऊर्जा प्रदान करती है न कि हर व्यक्ति के लालच को पूरा करने के लिए

– महात्मा गांधी

25 years 1983 2008 CUTS International

CONSUMERS INTERNATIONAL

Swedish Society for Nature Conservation